सितम्बर १९९० हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

वाणी कल्याणी

जैसी महारानी खेमा, वैसा ही राजकुमार अभय तिस्स। महाराज बिम्बिसार के हजार चाहने पर भी वह लम्बे समय तक भगवान बुद्ध के संपर्क में आने के लिए तैय्यार नहीं हुआ। खेमा की भांति उसके मन में भगवान बुद्ध के प्रति विरोध के भाव नहीं दिखते। लेकिन लगता है कि उसे अपने पूर्वाचार्य के प्रति इतना लगाव था कि उसकी अनुमति बिना वह भगवान बुद्ध के दर्शन के लिए भी नहीं जाना चाहता था। परंतु संयोग ऐसा हुआ कि स्वयं पूर्वाचार्य ने ही अभय को बुद्ध के पास भेजा। यद्यपि भेजने का मकसद कुछ और ही था।

उन्हीं दिनों देवदत्त ने भगवान बुद्ध के प्रति कुछ एक धर्मविरोधी हरकतें की। भिक्षु संघ में फूट डालने की असफल कोशिशें की। राजकुमार अजातशत्रु से मिलकर उनकी हत्या करवाने के भी कई असफल प्रयत्न किए। अनेक बार समझाने पर भी वह अपनी बुराई से बाज नहीं आया। तब भगवान ने देवदत्त के प्रति कुछ कठोर शब्दों का प्रयोग किया।

तब तक भगवान बुद्ध की ख्याति देश-प्रदेश में बहुत फैल चुकी थी। अनेक मत मतांतरों के लोग उनके बताए हुए चित्त विशुद्धि के मार्ग पर चलने लगे थे। संप्रदाय वादियों के लिए यह स्थिति असह्य थी। भगवान की प्रसिद्धि प्रतिष्ठा को नीचे गिराना उनके लिए बहुत आवश्यक था। देवदत्त के प्रति प्रयोग में लाए गए कठोर शब्दों में उन्हें भगवान बुद्ध की प्रतिष्ठा के हनन का एक उपाय सूझ पड़ा। अभय राजकुमार के पूर्वाचार्य ने भी इसका लाभ उठाना चाहा।

उसने अभय राजकुमार को समझाया कि यह बहुत अच्छा अवसर है। तुम्हारी प्रसिद्धि सचमुच बहुत फैलेगी। तुम श्रमण गौतम जैसे लब्ध-प्रतिष्ठ व्यक्ति से विवाद कर उसको सरलता से परास्त कर सकते हो। तुम उसके पास जाओ और उससे यह प्रश्न पूछो, 'क्या आप कभी किसी के प्रति ऐसे कठोर शब्द प्रयोग में लाते हैं जिससे उसका मन पीड़ित हो?' अगर वह उत्तर देगा 'हां कभी-कभीमैं ऐसे शब्दों का प्रयोग करता हूं।' तो तुम यह कहकर उसे आसानी से नीचा दिखा सकते हो कि अज्ञानी व्यक्तियों में और आप में क्या भेद हुआ? अज्ञानी व्यक्ति भी ऐसे अनुचित शब्दों का प्रयोग करते रहता है और लोगों को दुखी करते रहता है। इस प्रकार के उत्तर से स्वतः उसकी प्रतिष्ठा धूल में मिल जाएगी।

परंतु यदि श्रमण गौतम बड़ी चालाकी के साथ तुम्हारे प्रश्न का ऐसा उत्तर दे कि ,'मैं कभी ऐसी कठोर वाणी नहीं बोलता जिससे किसी के मन को चोट पहुँचे।' तो तुम कह सकते हो कि ,'आपने देवदत्त के प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो कि उसके मन को दुखी करने का कारण बना है।' इस प्रकार श्रमण गौतम झूठा साबित हो जाएगा और उसका मान-मर्दन होगा।

वह पहला उत्तर दे अथवा दूसरा, उसकी हार और तुम्हारी जीत निश्चित है। यह प्रश्न ही ऐसा है जिसका उत्तर हां या ना को छोड़कर और कुछ हो नहीं सकता। इस प्रश्न से सचमुच उसका हाल बेहाल हो जाएगा, जैसे किसी के कंठ में कोई लोहे का कांटा फँस जाए, जिसे कि ना निगलते बने ना उगलते। हां कहे तो मरे, ना कहे तो मरे।

अपने गुरु के दबाव से अभय राजकुमार वेणुवन के कलंदकनिवाप विहार में गया। वहां भगवान अपने भिक्षु संघ के साथ विहार कर रहे थे। यह वही मनोरम राज-उद्यान था जिसे उसके पिता ने भगवान बुद्ध को उनके भिक्षु संघ के लिए दान दे दिया था। इतने वर्षों में यह स्थान शुद्ध धर्म की कल्याणकारी तरंगों से तरंगित हो उठा था और फिर स्वयं भगवान बुद्ध की उपस्थिति ने समस्त वातावरण को मंगल मैत्री की उर्मियों से आप्लावित कर रखा था। अभय उस वातावरण से प्रभावित हुए बिना न रह सका। उसने भगवान को पंचांग प्रणाम किया और अत्यंत विनीत भाव से हाथ जोड़कर पास ही बैठ गया। अभय अपने गुरु के दबाव में आकर ही वाद-विवाद करने गया था। परंतु लगता है वह बिना मन के गया, अतः विवाद न कर सका। उसने देखा सूरज भी ढल रहा है। यह देश और यह काल विवाद की अनुमति नहीं देते। विवाद के बजाय उसने विनम्र भाव से भगवान को अगले दिन अपने निवास स्थान पर भोजन के लिए आमंत्रित किया। भगवान ने मौन रहकर स्वीकृति दी। अभय ने निर्णय किया कि उसके आचार्य ने जो प्रश्न उठाए हैं, वह कल अपने घर पर ही प्रस्तुत करेगा। विनम्रतापूर्वक प्रणाम कर वह अपने घर लौट आया।

दूसरे दिन भगवान अभय राजकुमार के घर भिक्षा के लिए पहुँचे। राजकुमार ने उन्हें आदरपूर्वक ऊंचे आसन पर बिठाया। श्रद्धापूर्वक अपने हाथों प्रणीत भोजन परोसा और भगवान द्वारा भोजन पूरा कर लेने के बाद, भोजन पात्र से हाथ खींच लेने पर, वह स्वयं नीचे आसन पर बैठ गया। उसे अपने गुरु का आदेश याद था। अतः उसके गुरु ने जैसे समझाया था वैसे प्रश्न प्रस्तुत किया।

"भन्ते भगवान्! क्या आप कभी ऐसे कठोर वचन बोलते हैं जिनसे कि सुननेवाले के मन को पीड़ा पहुँचे?"

भगवान ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "इस प्रश्न का हां या ना में एकाकी याने एकांशिक नहीं, बल्कि अनेकांशिक उत्तर होगा।"

बेचारा अभयकुमार हतप्रभ हो गया। उसके गुरु ने तो बलपूर्वक कहा था कि 'हां' या 'ना' इन दो को छोड़कर तीसरा उत्तर नहीं हो सकता और इन दोनों में से कोई भी उत्तर देने पर श्रमण गौतम मात खा जाएगा। पर अब तो तीसरा उत्तर सामने आनेवाला है। भगवान की ओर से उस प्रश्न का अनेकांशिक उत्तर दिए जाने के पूर्व ही अभय ने अपनी तार्किक हार स्वीकार कर ली और अपने गुरु के द्वारा फेंके गए पासे का उद्घाटन कर दिया। वह बहुत अधीर होकर भगवान के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

भगवान ने उत्तर देने के पहले अभय से ही एक प्रतिप्रश्न पूछ लिया। संयोग से उस समय उसकी गोद में उसका दुधमुँहा बच्चा चित्त याने पीठ के बल पर लेटा हुआ था। उसकी ओर संकेत करते हुए भगवान ने पूछा,

– "राजकुमार! यदि तुम्हारी या धाय की असावधानी से इस नन्हे बच्चे के कंठ में कोई कंकरया काठ का टुकड़ा चला जाय तो उसे बाहर निकालने के लिये तुम क्या करोगे?"

– "भन्ते भगवान्! ऐसा टुकड़ा बच्चे के गले में फँसकर उसके प्राण तक हरण कर सकता है। इसलिए मैं उसे उसके मुँह से निकालने का हर संभव प्रयत्न करूंगा। आवश्यकता हुई तो बायें हाथ से उसका सिर दबोचकर दायें हाथ की अँगुली को टेढ़ी करके वह पत्थर या काठ का टुकड़ा उसके कंठ से निकाल दूंगा। भले ऐसा करने में बच्चे के मुँह में कहीं खून ही क्यों न आ जाय। भले उसे पीड़ा ही क्यों न हो।"

– "तुम ऐसा क्यों करोगे?"

– "क्योंकि मुझे बच्चे से बेहद प्यार है। उस पर असीम अनुकम्पा है, दया है।"

– "ऐसे ही राजकुमार तथागत को प्राणियों पर असीम अनुकम्पा होती है। इसलिए वह ऐसी वाणी ही बोलते हैं, जो कि , उनके लिए हितकारी होती है।

• जो असत्य है, अहितकर है तथा सुननेवाले के लिए अप्रिय अनचाही भी है, ऐसी वाणी तथागत नहीं बोलते।

• जो सत्य है परंतु अहितकर है तथा सुननेवाले के लिए अप्रिय अनचाही भी है, ऐसी वाणी तथागत नहीं बोलते।

• जो असत्य है और अहितकर है, फिर भले ही सुननेवाले के लिए प्रिय और मनचाही हो, ऐसी वाणी तथागत नहीं बोलते।

• जो सत्य है, परंतु अहितकर है, फिर भले ही सुननेवाले के लिए प्रिय और मनचाही हो, ऐसी वाणी तथागत नहीं बोलते।

• जो सत्य है, पर हितकर है और सुननेवाले के लिए प्रिय और मनचाही है, ऐसी वाणी तथागत समयानुसार अवश्य बोलते हैं।

• जो सत्य है और हितकर, फिर सुननेवाले के लिए चाहे अप्रिय और अनचाही ही क्यों न हो, ऐसी वाणी तथागत समयानुसार अवश्य बोलते हैं।"

सम्यक् वाणी का ऐसा कल्याणकारी विश्लेषण सुनकर अभय राजकुमार अवाक् रह गया। प्रश्न किया था यह मानकर कि भगवान लाजवाब हो जाएंगे, निरुत्तर हो जाएंगे, बगले झांकने लगेंगे, संकोच में पड़ जाएंगे। उनकी गति सांप- छुछुंदर की सी हो जाएगी। उनसे न उगलते बनेगा न निगलते। हां कहेंगे तो सिर नीचा, ना कहेंगे तो सिर नीचा। परन्तु हुआ इसके सर्वथा विपरीत। भगवान ने ऐसा धर्ममय उत्तर दिया, जिसे सुनकर अभय राजकुमार का मानस सुखद आश्चर्य से विभोर हो उठा। अपने पिता बिम्बिसार से तथा अन्य अनेक स्वजनों से उसने भगवान बुद्ध के बारे में प्रशंसा के अनेक शब्द सुने थे। भगवान के विरोधियों से उनके बारे में हलके शब्द भी सुने थे। परंतु आज जो कुछ प्रत्यक्ष देखा सुना, उसने वास्तविकता उजागर कर दी। भगवान की करुणा सिंचित प्रज्ञा ने अभय के मन के सारे मैल धो दिये। भगवान के प्रति असीम श्रद्धा जाग उठी। धर्म का व्यवहारिक पक्ष साफ-साफ समझ में आ गया।

हमेशा सत्य और हितकर वाणी ही बोलनी चाहिए। चाहे वह कोमल हो या कठोर, मनचाही हो या अनचाही। वाणी का यही धर्म है। जो शुद्ध है, सर्वजनहितकारी है, सर्वमंगलकारी है, सर्वकल्याणकारी है। ऐसी कल्याणी वाणी सभी देशकाल में एक जैसी शुभ है, शिव है, मांगलिक है।

विपश्यी साधक जब साधना में पकने लगता है तो इस बात को बखूबी समझने लगता है कि वह जब-जब औरों के अनहित की वाणी बोलता है तो पहले अपने मन को मैला करना पड़ता है, जिससे उसका अपना अनहित तो प्रत्यक्ष हो जाता है, तत्काल हो जाता है। ऐसे ही जब-जब औरों के लिए हितकारी वाणी बोलता है तो पहले अपने मन को करुणा से भरना पड़ता है, जिससे उसका अपना हित तो प्रत्यक्ष हो जाता है, तत्काल हो जाता है। ऐसी सम्यक् वाणी से औरों के साथ-साथ अपना भी भला साधता है।

गंभीर विपश्यी साधक इस बात को ख़ूब समझने लगता है कि वाणी सदा कल्याणी ही बोले। मंगलकारिणी, कुशलकारिणी, परोपकारिणी ही बोले। धर्ममयी बोले, अधर्ममयी नहीं। सत्यमयी बोले, असत्यमयी नहीं। प्रिय बोले, अप्रिय नहीं। वाणी का यही सदुपयोग है। ऐसी वाणी ही सुभाषित है।

परन्तु यदि कोई नासमझ व्यक्ति मृदुल भाषा न समझे, कठोर भाषा ही समझने का आदी हो, ओर उसके लिए यदा कदा कठोर भाषा का प्रयोग करना पड़े, तो पहले अपने आप को विपश्यना द्वारा भीतर तक जांचकर देख ले। कहीं इस व्यक्ति के प्रति मन में क्रोध या द्वेष तो नहीं जागा है? मन ने कहीं अपना संतुलन तो नहीं खो दिया? समता तो नहीं गँवा दी? यह भी देख ले कि इस व्यक्ति के प्रति मन में प्यार ही है न? करुणा ही है न? यदि ऐसा हो तो ही कठोर शब्दों का प्रयोग करे, यह जानते हुए कि यह व्यक्ति केवल कठोरता की ही भाषा समझनेवाला है। परन्तु उन कठोर शब्दों में कटुता का नामोनिशान नहीं हो। दुर्भावना लेशमात्र भी न हो। जैसे कोई अनुभवी डाक्टर फोड़े पर नश्तर चलाता है, तो कठोर हाथों से ही चलाता है, पर मन में कटुता नहीं होती। रोगी के स्वास्थ्य-लाभ की मंगल कामना ही होती है। वैसे ही शब्द कठोर भले हों, परन्तु मन का आधार तो कल्याण कामना ही रहे। तो वाणी का सदुपयोग ही है। वाणी की सदुपयोगिता ही कल्याण की कुंजी है।

आओ, साधकों, कल्याणी वाणी से अपना और सबका कल्याण साधें!

कल्याण मित्र,
स.ना.गो.